आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 23/04/2023; Published: 24/06/2023

कहानी

किस्सा-ए-सर्टिफिकेट

- रिम्पू सिंह 'सुभाषिनी'
गाजीपुर (उ॰प्र॰)

रिम्पू सिंह 'सुभाषिनी', **किस्सा-ए-सर्टिफिकेट** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023,(381-383)

राज्य स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता की तैयारी लगभग पूर्ण हो चुकी थी।विभिन्न प्रतिस्पर्धा में प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ी मैदान में उपस्थित थे,वह भी अपनी टीम के साथ खेल की रणनीति पर चर्चा में व्यस्त थीं कि अचानक एक परिचित स्वर उसके कानों से टकराया।"अरे! सूक्ति तुम",उसने देखा राज्य स्तरीय कोच अघोष जी उसके सामने है उसने अभिवादन करते हुए कहा-" जी,मैं यहाँ प्रतिस्पर्धा में प्रतिभाग करने आयी हूँ।

अघोष जी बोले -"और कैसी हो ।"

"ठीक हूँ सर" मुस्कराते हुए सूक्ति ने जबाब दिया।

अघोष जी कुछ स्मरण करते हुए बोले - आपका सर्टिफिकेट आपको मिला?

सूक्ति आश्चर्य से पूछी -"कौन-सा सर्टिफिकेट सर ?"

"राज्यस्तरीय प्रशिक्षण का, आपका और मिथ्या का मैंने अनीता को दे दिया था।अघोष जी की यह बात सुनकर सूक्ति बोली-"मुझे तो नहीं मिला वैसे कब दिया था आपने, सर!"

"लगभग दो महीने हुए "अघोष जी बोले।

सूक्ति-"अच्छा ! पर मुझे उन्होंने नहीं दिया है अभी तक,और बताया भी नहीं ।"

अघोष बोले -"कोई बात नहीं,आप अनीता से बात कर ले और उनसे सर्टिफिकेट ले, लें।"

सूक्ति ने उनको धन्यवाद करते हुए अभिवादन किया।

मुख्य अतिथि के आने की उद्घोषणा सुन सभी मुस्तैदी से अपने-अपने कार्य में लग गये। उद्घाटन के साथ ही प्रतिस्पर्धाएँ शुरू हो गयी।दिन भर की व्यस्तता से सूक्ति काफी थक गयी थी और उसको ध्यान भी ना रहा।अगले दिन जब उसे स्मरण हुआ कि अनीता को फ़ोन कर अपना सर्टिफिकेट लेना है तो वह अपना मोबाइल लेकर बैठी और अनीता का नंबर डायल किया,औपचारिक बातें करने के बाद अपने सर्टिफिकेट के विषय में पूछा तो अनीता बोली कि वह तो पन्द्रह दिन पहले मिथ्या को दे चुकी है।उसने कहा था कि मैं सूक्ति को दे दूँगी तो मैंने आपका सर्टिफिकेट भी उसी को दे दिया।

अब सूक्ति को सूझा कि मिथ्या को फ़ोन कर अपना सर्टिफिकेट ले लूँ। उसने जब मिथ्या को फोन किया तो उसने कहा-"हाँ ठीक है मैं दे दूँगी।" तभी उसे ध्यान आया कि परसों प्रशिक्षण है और मिथ्या भी वहाँ आएगी ,तो उसने कहा- प्रशिक्षण में आइएगा तो लेते आइयेगा।"

उस दिन प्रशिक्षण में जब सूक्ति मिथ्या से मिली तो उससे अपने सर्टिफिकेट को माँगा तो मिथ्या ने कहा- अरे!मैं तो रखना ही भूल गईं,अच्छा चलो मेरे घर आकर ले लेना।सूक्ति बोली-"ठीक है,पर अभी मुझे कुछ काम है,तुम थोड़ी देर इंतज़ार कर लो।

लगभग दो घण्टे इंतज़ार के बाद सूक्ति की समझ में आ गया कि वह अभी घर चलने वाली नहीं है।सूक्ति उसके स्वभाव से भली-भाँति परिचित थी और दो घण्टे से उसे बिना मतलब इधर-उधर समय व्यर्थ करते हुए देख रही थी कि सूक्ति की माँ का फोन आया कि जरा जल्दी घर जाना । सूक्ति ने मिथ्या से कहा-"मुझे कुछ आवश्यक कार्य है इसलिए मैं घर जा रही हूँ ,आप नीति को दे दीज़ियेगा।

मिथ्या बोली-ठीक है मैं नीति को दे दूँगी,उससे ले लेना।"

सूक्ति अपनी झल्लाहट दबाते हुए बोली-"ठीक है मैं चलती हूँ।"

कुछ दिन व्यतीत हो गये परन्तु उसे उसका सर्टिफिकेट नहीं मिला।इस बीच उसने मिथ्या से कई बार बात कर लिया।सूक्ति को ब्लॉक स्तरीय खेल में उत्कृष्ट आने के कारण मेडल और सर्टिफिकेट मिलने वाला था ,वहाँ मिथ्या भी आने वाली थी तब उसने मिथ्या को पुनः फोन व मैसेज किया और कहाँ कि"जब आप कार्यक्रम में आना तो कृपा कर ध्यान से मेरा सर्टिफिकेट भी लेती आना।"

सर्टिफिकेट और मेडल पाकर सूक्ति बहुत प्रसन्न थी,उसने इस यादगार पल को कैमरे में कैद करने की सोची और इसके लिए उसने मुख्य अतिथि से बात किया तो वह तैयार हो गये।अपनी टीम के साथ जब वह फोटो खिंचवा रही थी तभी मिथ्या वहाँ आयी और उसने सूक्ति को हटाना चाहा तो वह बोली-"यह हमारे ब्लॉक की टीम का सामूहिक फोटो हो रहा है,इसके बाद आप आ जाये।"फिर भी मिथ्या उसमे घुसने का प्रयास करने लगी तो सूक्ति टस से मस न हुई।मिथ्या को इस बात से बहुत ही बुरा लगा और वह उससे लड़ने को तैयार थी।

सूक्ति जब उससे मिली और सर्टिफिकेट माँगने लगी तो वह लगभग चिल्लाते हुए बोली-"हाँ,दे दूँगी आज नहीं लाई हूँ।" और अनाप-शनाप बोलने लगी।सूक्ति को क्रोध तो आ रहा था फिर भी वह सामान्य होकर उससे बोली-"छोटी सी बात का बतंगड़ क्यूँ बना रही हो,मेरा सर्टिफिकेट दे दो बात ख़त्म।" मिथ्या और भी चिढ़ गयी और कहने लगी – मुझे इतने दिन बाद मिला है तो तुम्हें भी अब डेढ साल बाद ही मिलेगा।"

सूक्ति का मन खिन्न हो गया, वह घर जाने के लिए निकली तो कुछ लोगों ने उससे मिथ्या के चिल्लाते की वजह पूछी उसने सब बाते बतायी,सभी ने उसके व्यवहार की निंदा की कुछ ने तो यहाँ तक कह दिया कि जब उसने कहा है कि " डेढ़ साल बाद दूँगी" तो वह डेढ़ साल बाद ही देगी।सूक्ति को बहुत बुरा लग रहा था,वह वहाँ नहीं रुकी और घर के लिए निकल पड़ी अभी वह घर पहुँची भी नहीं थी की कई परिचितों की कॉल आने लगी। घर पहुँचकर सबसे बात की सब यही पूछ रहें थे कि "हुआ क्या?" मिथ्या तुम्हारी बहुत शिकायत कर रही थी।उसे बहुत क्रोध आया और सारा वृतांत कह सुनाया।

सूक्ति ने पुनः अनीता को फोन किया और सारी बातें बतायी।कहाँ कि-"तुम परेशान न हो,मैं उससे लेकर तुम्हें दे दूँगी।"कुछ दिन बाद जब सूक्ति ने अनीता को फोन किया तो वह उसे समझाने की कोशिश करने लगी।सूक्ति ने

कड़े शब्द में अनीता से कहा कि-"आप अगर नहीं दिला पा रही है तो,मैं अघोष जी से बात करूँ।"मैं ही बात करती हूँ" कहकर अनीता ने फोन रख दिया। थोड़ी देर बाद अघोष जी का फोन आया तो सूक्ति ने सारा वृतांत कह सुनाया, उन्होंने कहा-"मैं आपका सर्टिफिकेट दिलवाऊँगा, मैं लाया हूँ तो यह मेरी जिम्मेदारी है आप परेशान न हो।"

कई दिन व्यतीत हो गये तो एक दिन सूक्ति ने अघोष जी को फोन किया तो वे बोले-"मुझे पता होता कि इतना बवाल होगा तो मैं आपको ही देता,खैर मैं आपको जरूर दिलवाऊँगा आपका सर्टिफिकेट।"

अबकी सूक्ति ने कहा-"अब यह मेरे आत्मसम्मान की बात है सर! मैं आपको एक सप्ताह का समय देती हूँ,अगर आप दिला पाये तो ठीक,वरना आप मुझे मुक्त कर दीज़ियेगा कि मैं जो भी करूँ आप से मतलब नहीं होगा।आप मेरा सर्टिफिकेट लाये इसके लिए आपका धन्यवाद।"

एक सप्ताह पूरा होने वाला है,इस बीच सूक्ति ने दो,तीन बार अघोष जी को फोन और मैसेज से स्मरण कराया है,परन्तु अभी भी उसके हाथ खाली है देखना है कि सूक्ति को उसका सर्टिफिकेट मिलता है या अभी और इंतजार बाकी है।सूक्ति क्या करने वाली है?

क्या मिथ्या जो कर रही है वह सही है?

क्रमशः

आगे की कहानी अगले अंक में.........

****